प्रभुसत्ता का विकास

एक निश्चित भू-भाग पर सर्वोच्च सत्ता के रूप में प्रभुसत्ता की धारणा एक आधुनिक धारणा है और इसकी उत्पत्ति वास्तव में आधुनिक राष्ट्र-राज्य के उदय के साथ जुड़ी हुई है। आधुनिक रूप में प्रभुसत्ता सिद्धान्त की उत्पत्ति सोलहवीं सदी में तब हुई जब मध्यकालीन मान्यताएँ और संस्थाएँ लुप्त होती जा रही थीं। इन्हीं राष्ट्र-राज्यों का औचित्य स्थापित करने के लिए प्रभुसत्ता सिद्धान्त स्थापित किया गया।

किंतु आधुनिक युग में प्रभुसत्ता की धारणा का आशय यह नहीं है कि प्राचीन और मध्ययुग के लोग इस धारणा से पूर्णतः अनभिज्ञ थे। अभिप्राय केवल इतना है जिस संदर्भ में वर्तमान युग में संप्रभुता का प्रयोग किया जा रहा है, पहले इस संदर्भ में विशेष बल नहीं दिया जाता था तथा सर्वोच्च सत्ता के लिए इस शब्द 'संप्रभुता' का प्रयोग भी नहीं किया जाता था। प्रभुसत्ता की धारणा का वर्तमान रूप में विकास तीन चरणों में हुआ है:-

प्राचीन काल के यूनानी नगर राज्य आत्मनिर्भर, स्वतंत्र और स्वाधीन थे। यहाँ राजा की सत्ता के अतिरिक्त सम्पूर्ण समुदाय की सर्वोच्च सत्ता भी होती थी तथा यूनानी कानून को अपना स्वामी मानते थे। अरस्तू ने भी राज्यों का वर्गीकरण सर्वोच्च सत्ता की स्थिति के आधार पर किया था। अर्थात् सर्वोच्च सत्ता एक व्यक्ति के हाथ में है या कुछ व्यक्तियों के हाथों में, सरकार का स्वरूप इसी से निर्धारित होता है। रोमन राज्यों में भी जनता ही सर्वोच्च सत्ता का स्रोत होती थी और शासक अपनी शक्ति और औचित्य सिद्ध करने के लिए जनता की इच्छा का प्रतीक होता था।

Scanned with CamScanner

प्रभुसत्ता की आधुनिक धारणा की उत्पत्ति मध्यकाल में होती है। सामंतवादी व्यवस्था स्तरित श्रेणीक्रम में होती थी जहाँ प्रत्येक सत्ताधारी अपने अपने क्षेत्रों का अधिपति होता है।

प्रभुसत्ता से आशय उन छोटे-छोटे अर्धस्वतंत्र राज्यों पर शासन करने वालों से है जो अपने ऊपर एक अन्य सत्ता को स्वीकार करते हैं और आधिपत्य का आशय है सर्वोच्च शासक जो स्वयं को किसी अन्य सत्ता के अधीन नहीं रखता। इस प्रकार के सत्ता के अंतिम स्तर को प्रभुसत्ता की संज्ञा दी जाने लगी। मध्ययुगीन युग में सत्ता के 3 केन्द्र रहे हैं:- चर्च, राजा तथा सामन्त।

इस युग में प्रभुसत्ता को लेकर राजा और चर्च में झगड़ा रहा है और अन्ततः राजा की विजय के साथ धर्मनिरपेक्षता के आधार पर प्रभुसत्ता 16वीं सदी में विकसित हुई।

सामंतवादी ढाँचे के पतन के परिणामस्वरूप आधुनिक राष्ट्र राज्यों का उदय हुआ, परिणामस्वरूप मध्ययुगीन मान्यताएँ और संस्थाएँ समाप्त होने लगी। आधुनिक राष्ट्र राज्यों में एक निश्चित भूमि पर बसे हुए लोगों को मिल-जुलकर रहने के लिए कानून और व्यवस्था का औचित्य स्थापित किया जाने लगा और लोगों को विभिन्न भेदभावों से ऊपर उठकर एकजुट रहने के लिए सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और भावात्मक आधार प्रदान किया जाने। ~~और लोगों को विभिन्न भेदभावों से ऊपर उठकर एकजुट रहने के लिए~~

राष्ट्र-राज्यों में सर्वोच्च सत्ता को प्राचीन समय से ही प्रचलित थी, को राज्य के स्थीकारण के लिए आवश्यक समझा जाने लगा और क्षेत्रीय अधिपत्य व्यवस्था (जो मध्यकालीन सामंतवादी व्यवस्था थी) को राज्य के विकास के लिए आवश्यक समझा जाने लगा।

अतः कहा जा सकता है कि प्राचीन काल की सर्वोच्च सत्ता की धारणा का मध्यकालीन अधिपति धारणा के मिलन के परिणामस्वरूप आधुनिक राष्ट्र राज्य में संप्रभुता की धारणा का विकास हुआ।

Scanned with CamScanner